ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

मध्यस्थ दर्शन में सह-अस्तित्व और परिवार-मूलक व्यवस्था: समाधान, समृद्धि एवं न्याय का दार्शनिक विमर्श

गौरीकांता साहू
शोधार्थी, दर्शन एवं थियोलॉजिकल स्टडीज स्कूल
लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात
एवं
सुनील छानवाल
दर्शन एवं थियोलॉजिकल स्टडीज स्कूल
लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात

सारांश

मानव सभ्यता के विकास में परिवार सदैव समाज की मूलभूत इकाई के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। आधुनिकता, भौतिकवाद और अतिशय व्यक्तिवाद के प्रभाव से पारिवारिक संरचना एवं संबंधों में गंभीर असंतुलन उत्पन्न हुआ है, जिससे मानवीय मूल्यों का क्षरण दृष्टिगोचर होता है (तिवारी, 2019)। यह शोध-पत्र मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) के प्रतिपादक श्री ए. नागराज के दार्शनिक चिंतन के अनुसार समाज व्यवस्था की मूल इकाई के रूप में परिवार की अवधारणा का समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार परिवार केवल जैविक या वंशानुगत संरचना न होकर जागृत मानवों का सह-अस्तित्वपरक समूह है, जहाँ समाधान, समृद्धि और न्याय की अनुभूति एवं प्रमाणन संभव होती है (नागराज, 2011क)। यह शोध प्रतिपादित करता है कि परिवार में मूल्यों का निर्वाह, पारदर्शिता, सहभागिता और पूरकता ही सामाजिक स्थिरता, अभय और प्रकृति-संतुलन का आधार है। अध्ययन में मध्यस्थ दर्शन की मौलिक अवधारणाओं—सह-अस्तित्व, परिवार-मूलक स्वराज्य, सर्वतोमुखी समाधान, और आचरण-पूर्णता—का विस्तृत विवेचन किया गया है।

बीज शब्द: मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद, परिवार-मूलक स्वराज्य, समाधान, समृद्धि, न्याय, जीवन-जागृति, व्यवस्था

1. प्रस्तावना

मानव जाति के विकासक्रम में परिवार का सदैव एक अपरिहार्य और केन्द्रीय स्थान रहा है। परिवार वह प्रथम सामाजिक इकाई है, जहाँ व्यक्ति मानव-मानव संबंधों तथा मानव-प्रकृति संबंधों को पहचानते हुए उसमें निहित

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

दायित्वों, कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का निर्वाह करता है (शर्मा, 2018)। किंतु आधुनिकता और आधुनिकीकरण के व्यापक प्रभाव से परिवार की संरचना एवं कार्यप्रणाली अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। इन चुनौतियों के मूल में दो प्रमुख परंतु परस्पर विरोधी विश्व-दृष्टिकोण रहे हैं—आदर्शवादी दृष्टिकोण और भौतिकवादी दृष्टिकोण।

आदर्शवादी दृष्टिकोण से संचालित परिवारों में संबंधों का निर्वाह कठोर नैतिक सिद्धांतों और कर्तव्यबोध पर आधारित होता है, जिससे व्यक्ति की सहजता और मौलिकता का हनन होता है तथा परिवार के सभी सदस्यों को निर्णय-प्रक्रिया में समान रूप से शामिल होने के अवसर सीमित हो जाते हैं। वहीं भौतिकवादी परिवारों में आर्थिक आवश्यकता, उपभोग, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत संतुष्टि को प्रधानता दी जाती है, जिससे संबंध केवल आर्थिक लेन-देन तक सीमित हो जाते हैं और मानवीय मूल्यों का क्षरण होता है (तिवारी, 2019; सेनगुप्ता, 2011)।

दोनों ही दृष्टिकोण मूलतः व्यक्तिवादी तथा शक्ति-केन्द्रित हैं, जिनमें परिवार के निर्णयों में सभी सदस्यों की सहभागिता, समान सम्मान और बहुमुखी विकास के अवसर अत्यंत सीमित हो जाते हैं। इस संदर्भ में मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) एक वैकल्पिक और समन्वयात्मक दार्शनिक प्रतिमान प्रस्तुत करता है, जो आदर्शवाद और भौतिकवाद के मध्य एक संतुलित मार्ग का प्रतिपादन करता है (नागराज, 2011क)।

2. मध्यस्थ दर्शन: सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

2.1 सह-अस्तित्ववाद की दार्शनिक नींव

मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) एक व्यापक और समग्र दार्शनिक प्रणाली है, जिसका प्रतिपादन श्री ए. नागराज (1920-2016) ने किया। यह दर्शन आदर्शवाद और भौतिकवाद के बीच एक समन्वयात्मक मार्ग प्रस्तुत करता है (नागराज, 2011क; सिंह, 2020)। सह-अस्तित्ववाद का मूल सिद्धांत यह है कि संपूर्ण अस्तित्व—चाहे वह प्रकृति हो या मानव—परस्पर संबंधित, पूरक और सह-अस्तित्व में है। इस दर्शन के अनुसार, प्रत्येक इकाई अपने अस्तित्व के लिए अन्य इकाइयों पर निर्भर है और सभी इकाइयाँ मिलकर एक संपूर्ण व्यवस्था का निर्माण करती हैं (नागराज, 2011ख; पाठक, 2021)।

मध्यस्थ दर्शन में मानव का लक्ष्य तीन मूलभूत ज्ञानों—जीवन-ज्ञान, अस्तित्व दर्शन-ज्ञान और मानवीयता पूर्ण आचरण-ज्ञान—को समझकर जीवन-जागृति को प्राप्त करना है। जीवन-जागृति का अभिप्राय है व्यक्ति का अपने वास्तविक स्वरूप, अपने संबंधों और अपने दायित्वों के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक और सचेत होना (नागराज, 2011ग)। यह जागृति व्यक्ति, परिवार और समाज में विश्वास, सम्मान, स्नेह और पूरकता के माध्यम से प्रमाणित होती है। सिंह (2020) के अनुसार, मध्यस्थ दर्शन एक व्यावहारिक दर्शन है जो मानव जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

2.2 परिवार: मध्यस्थ दर्शन में केन्द्रीय इकाई

मध्यस्थ दर्शन में परिवार को समाज व्यवस्था की सर्वाधिक मूलभूत और महत्वपूर्ण इकाई के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। नागराज (2011घ) के अनुसार, परिवार और व्यवस्था अविभाज्य हैं; परिवार के बिना व्यवस्था और व्यवस्था के बिना परिवार, दोनों ही भ्रम के द्योतक हैं। परिवार को केवल रक्त संबंधों या वंशानुगत संरचना के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि इसे जागृत मानवों के समूह के रूप में परिभाषित किया गया है, जो निरंतर सुख की दिशा में समाधान और समृद्धि को प्रमाणित करने हेतु साथ-साथ जीवन यापन करते हैं।

परिवार वह स्थान है जहाँ मानव अपनी जागृति का प्रमाण प्रस्तुत करता है। यहाँ जागृति से तात्पर्य है—जीवन के उद्देश्य, संबंधों की प्रकृति, अपने दायित्वों और समग्र व्यवस्था में अपनी भूमिका के प्रति पूर्ण जागरूकता (पाठक, 2020)। नागराज (2018) के अनुसार, परिवार समाज व्यवस्था का प्रथम सोपान है और परिवार में जो कमी रह जाती है, उसकी पूर्ति कहीं और संभव नहीं होती। इसका अभिप्राय यह है कि यदि व्यक्ति परिवार में ही संबंधों को समझने, मूल्यों का निर्वाह करने और व्यवस्था में भागीदारी करने में असफल रहता है, तो वह समाज में भी सही तरीके से अपनी भूमिका नहीं निभा सकता।

3. परिवार की संरचना और महत्व

3.1 परिवार में संबंधों की प्रकृति

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार परिवार में संबंध पूर्णता के अर्थ में अनुबंध होते हैं, जैसे अभिभावक-संतान, भाई-बहन, पति-पत्नी, गुरु-शिष्य, मित्र-मित्र आदि (नागराज, 2011ङ)। प्रत्येक संबंध में निश्चित पूरकता, जिम्मेदारियाँ और अपेक्षाएँ निहित होती हैं, और इनका निर्वाह ही न्याय है। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार न्याय व्यक्तिवादी न होकर सह-अस्तित्ववादी होता है, जो व्यक्ति से लेकर परिवार, समाज, राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक संबंधों की पहचान से सूत्रित होता है (तिवारी, 2021)।

नागराज (2011च) ने स्पष्ट किया है कि संबंध = पूर्णता के अर्थ में अनुबंध है। यह पूर्णता तीन रूपों में व्यक्त होती है:

1. गठन पूर्णता: परमाणु में मध्यांश व परिवेशीय अंशों का निश्चित संख्यात्मक विधि से संतुष्ट होना, प्रस्थापना-विस्थापन से मुक्त होना।

2. क्रिया पूर्णता: जागृति सहज सर्वतोमुखी समाधान, सह-अस्तित्व में जीने का प्रमाण, संज्ञानीयता पूर्ण, सतर्कता और मानवीयता पूर्ण क्रियाकलाप।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

3. आचरण पूर्णता: दिव्य मानव प्रतिष्ठा-दिव्य मानवीयता, जीवन मुक्त (भ्रम मुक्त जीवन), सजगता, सहजता, कैवल्य, गंतव्य, विकास का चरमोत्कर्ष।

3.2 तीन पीढ़ियों का सह-अस्तित्व

मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतानुसार, आदर्श परिवार लगभग 10 सदस्यों का तीन पीढ़ियों (बुजुर्ग, युवा और बच्चे) का साथ-साथ रहना अनुभव, श्रम और जिज्ञासा के संतुलन को संभव बनाता है (शर्मा, 2018)। प्रत्येक पीढ़ी की अपनी विशेषताएँ और योगदान होते हैं:

बुजुर्ग पीढ़ी: बुजुर्गों के पास जीवन का समृद्ध अनुभव और पर्याप्त समय होता है। वे बच्चों के संस्कार निर्माण में अपरिहार्य भूमिका निभाते हैं। उनका ज्ञान और अनुभव परिवार को सही दिशा देने में सहायक होता है। बुजुर्ग पीढ़ी परिवार की स्थिरता और संतुलन का प्रतीक होती है (कुमार, 2019)।

युवा पीढ़ी: युवा पीढ़ी में ऊर्जा, उत्साह और उत्पादकता होती है। वे उत्पादन और व्यवसाय में सक्रिय रूप से भागीदारी करते हैं। जब बुजुर्ग बच्चों की देखभाल में सहायता करते हैं, तो युवा पीढ़ी निश्चिंत होकर अपने कार्य में संलग्न हो सकती है और परिवार तथा समाज को समृद्ध बना सकती है।

बच्चे: बच्चों में जिज्ञासा और सीखने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। वे परिवार का भविष्य हैं। उनका सही संस्कार और शिक्षा परिवार और समाज के भविष्य को निर्धारित करती है। तीन पीढ़ियों के साथ-साथ रहने से बच्चों को विभिन्न दृष्टिकोणों और अनुभवों को समझने का अवसर मिलता है।

नागराज (2011छ) के अनुसार, "प्रत्येक मानव का अकेले में कोई कार्यक्रम स्पष्ट नहीं है।" मानव शिशु जब जन्म लेता है तो उसे संबंध प्राप्त होते ही हैं, क्योंकि संबंध-विहीन कोई मानव नहीं है। आचरण भी परस्परता में ही प्रकट होता है—मानव-मानव परस्परता में व्यवहार और मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ कार्य। मानव अपनी समस्त आवश्यकताओं को परिवार व परिवार समूह में ही पूरा कर सकता है।

4. परिवार-मूलक स्वराज्य व्यवस्था

4.1 परिवार सभा और निर्णय प्रक्रिया

मध्यस्थ दर्शन में परिवार-मूलक स्वराज्य व्यवस्था को विशेष महत्व दिया गया है। नागराज (2011ज) के अनुसार, "परिवार ही मूलतः सभा के रूप में, सभा ही परिवार के रूप में वैभवित होता है। निर्णय लेने के रूप में सभा कहलाता है। क्रियान्वयन करने के रूप में परिवार कहलाता है।" इस प्रकार परिवार और परिवार सभा अविभाज्य हैं।

परिवार सभा में संवाद अनिवार्य और अपरिहार्य है, जिसमें एक-दूसरे की मानसिकता, प्रयोजन, फल और परिणाम का बोध होना पाया जाता है। फलस्वरूप हर निर्णय सर्वसम्मति के रूप में सार्थक होना पाया जाता है (शर्मा, 2014)। सर्वसम्मतियाँ परिवार में ही संभव हो पाती हैं। परिवार के सदस्य ही परिवार सभा में परिवार की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निर्णय लेते हैं और उन निर्णयों का परिवार में क्रियान्वयन किया जाता है।

4.2 स्वराज्य की आधुनिक प्रासंगिकता

परिवार-मूलक स्वराज्य व्यवस्था में पारिवारिक संरचनाएं स्वायत्तता, स्वतंत्रता, पारस्परिक सम्मान और सामूहिक निर्णय लेने के सिद्धांत को मूर्त रूप देती हैं (पाठक, 2021)। यह व्यवस्था सद्भाव, संगठन, सहयोग और स्वराज्य के सिद्धांतों का समर्थन करती है। आधुनिक लोकतांत्रिक सिद्धांतों और सहभागी शासन की अवधारणा के साथ इसका गहरा सामंजस्य पाया जाता है (Kumar, 2019; Sengupta, 2011)।

5. समाधान और समृद्धि: परिवार का लक्ष्य

5.1 सर्वतोमुखी समाधान की अवधारणा

मध्यस्थ दर्शन में परिवार का लक्ष्य सर्वतोमुखी समाधान और समृद्धि की प्राप्ति है। समाधान का अर्थ है: जानना, मानना, पहचानना और निर्वाह करना; 'क्यों' और 'कैसे' का उत्तर प्राप्त करना; तथा समस्याओं का विवेक-सम्मत समाधान (नागराज, 2011झ)।

सर्वतोमुखी समाधान चार आयामों में स्पष्टता से प्रकट होता है:
1. अनुभव आयाम: सह-अस्तित्व में अनुभव अर्थात् सत्ता में संपृक्त प्रकृति को जानना, मानना, पहचानना व निर्वाह करना। तीन ज्ञान संपन्नता—जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान।
2. विचार आयाम: धर्म पूर्ण विचार।
3. व्यवहार आयाम: न्याय पूर्ण व्यवहार।
4. व्यवसाय आयाम: नियम पूर्ण उत्पादन।

क्रिया पूर्णता अर्थात् मानव का जागृत होना, समझदार होना, अनुभव संपन्न होना, दस क्रियाओं में जीना—आत्मा से बुद्धि, बुद्धि से चित्त, चित्त से वृत्ति और वृत्ति के अनुसार मन का संचालित होकर कार्य-व्यवहार करना अर्थात् आत्मानुगामी होना। ऐसे जीता हुआ मानव ही समझदार मानव है (नागराज, 2011ञ)।

5.2 समृद्धि की परिभाषा

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

समृद्धि का आशय है: आवश्यकता से अधिक उत्पादन, उपभोग में संयम, और अभाव का अभाव (नागराज, 2011ट)। यह परिभाषा आधुनिक सतत विकास (sustainable development) की अवधारणा से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, जहां उपभोग और उत्पादन के बीच संतुलन पर बल दिया जाता है (Sharma, 2021; Tiwari, 2019)।

6. समाज व्यवस्था के पाँच आयाम

मध्यस्थ दर्शन में समाज व्यवस्था के पाँच आयाम बताए गए हैं, जो परिवार स्तर से ही प्रारंभ होते हैं (नागराज, 2011ठ):

1. शिक्षा-संस्कार: परिवार में बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा और संस्कार होते हैं। यहाँ बच्चे मानवीय मूल्यों, संबंधों और जीवन कौशल को सीखते हैं। यह आयाम व्यक्तित्व विकास और सामाजिक समाजीकरण का आधार है (Pathak, 2020)।

2. स्वास्थ्य-संयम: परिवार में स्वास्थ्य और संयम की आदतें विकसित होती हैं। स्वस्थ जीवन शैली और आहार-विहार का ज्ञान परिवार में ही प्राप्त होता है।

3. उत्पादन-कार्य: परिवार उत्पादन की इकाई है। परिवार के सदस्य मिलकर उत्पादन करते हैं और आजीविका अर्जित करते हैं। यह आर्थिक स्वावलंबन का आधार है।

4. विनिमय-कोष: परिवार में संसाधनों का विनिमय और प्रबंधन होता है। परिवार यह सिखाता है कि संसाधनों का उपयोग कैसे किया जाए और बचत कैसे की जाए।

5. न्याय-सुरक्षा: परिवार में न्याय और सुरक्षा की भावना विकसित होती है। परिवार यह सिखाता है कि संबंधों में न्याय कैसे हो और सुरक्षा कैसे बनी रहे।

जब ये पाँचों आयाम परिवार स्तर पर सही तरीके से व्यवस्थित हो जाते हैं, तो समाज में स्थिरता और समरसता संभव होती है (सिंह, 2020)।

7. जीवन-जागृति और मानवीयता

7.1 जागृति की सार्वभौमिकता

नागराज (2011ड) के अनुसार, "जागृति की अर्हता, अपेक्षा, संभावना, स्त्री-पुरुषों के लिए समान रूप में विद्यमान है। इसीलिए इनमें समानता की परंपरा और उपलब्धि होती है।" जागृति के चार मूलभूत आयाम हैं:

1. मानव जागृतिपूर्वक ही सामाजिक होता है।

2. मानव जागृतिपूर्वक सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का निर्वाह करता है।

3. मानव ही जागृतिपूर्वक संपूर्ण भ्रम से मुक्त होता है।

4. मानव जागृतिपूर्वक ही 'भ्रम ही बंधन का कारण होना' समझ पाता है।

यह दृष्टिकोण लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय की आधुनिक अवधारणाओं के साथ पूर्ण सामंजस्य रखता है (Sharma, 2021; Tiwari, 2021)।

7.2 संतुलन और सामरस्यता

नागराज (2011ढ) के अनुसार, "मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार उपलब्ध होने के उपरांत ही हर मानव में, से, के लिए संतुलन एक नित्य उत्सव का आधार बिंदु है।" संतुलन का मूल रूप संपूर्ण मानव संतुलन, अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करता हुआ दसों सीढ़ियों में परस्पर पूरकता पूर्वक मानव सहज जीने की कला को प्रमाणित करने के रूप में है।

संतुलन के स्वरूप में सम्मिलित हैं:

1. शिक्षा-संस्कार-व्यवस्था और संविधान में सामरस्यता

2. मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में सामरस्यता

3. मानवीय व्यवस्था सहज पांचों आयामों में सामरस्यता

4. संबंध-मूल्य-मूल्यांकन और उभयतृप्ति में सामरस्यता

5. नैसर्गिक संबंध और मानवीयता पूर्ण विधि से जीने की कला में सामरस्यता

6. दसों सीढ़ियों में परस्पर उपयोगिता, पूरकता और सामरस्यता

7. व्यवसाय, व्यवहार, विचार और अनुभव में सामरस्यता

यही संतुलन का प्रमाण है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

8. विमर्श और विश्लेषण

8.1 सह-अस्तित्व का दर्शन

मध्यस्थ दर्शन में 'सह-अस्तित्व' का अर्थ केवल बाह्य सहजीवन से नहीं, बल्कि पारिवारिक संरचना में परस्पर समन्वय, सहयोग और न्याय पर आधारित संबंधों से है। परिवार के प्रत्येक सदस्य का अस्तित्व केवल व्यक्तिगत उद्देश्यों तक सीमित न रहकर सामूहिक कल्याण और संतुलित विकास के लिए होता है (पाठक, 2020)। यह विचार इस तथ्य को रेखांकित करता है कि परिवार के भीतर व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक होते हैं।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि स्वस्थ पारिवारिक संबंध और आपसी सहयोग, मानसिक स्वास्थ्य और संज्ञानात्मक विकास में सहायक होते हैं (Walsh, 2016; Minuchin, Nichols, & Lee, 2014)। पारिवारिक सह-अस्तित्व का सिद्धांत परिवार में परस्पर विश्वास, पारदर्शिता और सहभागिता को बढ़ावा देता है, जिससे न केवल व्यक्तियों का आत्म-सम्मान विकसित होता है, बल्कि एक सामूहिक चेतना का भी निर्माण होता है।

8.2 परिवार में विविधता का सम्मान

मध्यस्थ दर्शन में परिवार का गठन साम्यता के आधार पर और पूर्णता के अर्थ में संबंध को पहचानने के अर्थ में है, जहां परिवार सभा में श्रेष्ठता के सम्मान की व्यवस्था है। परिवार एक बहु-आयामी संरचना के रूप में देखा जाता है, जहाँ सह-अस्तित्ववादी व्यक्तित्व, दृष्टिकोण और विचारधारा का सम्मान किया जाता है। श्रेष्ठता के सम्मान के आधार पर व्यवस्था में जीना और समग्र व्यवस्था में भागीदारी होती है (शर्मा, 2014)।

आधुनिक समाज में तेजी से बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में, पारिवारिक विविधता को स्वीकारना और इसे एकजुटता में बदलना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि जिन परिवारों में विभिन्न विचारों और दृष्टिकोणों का सम्मान किया जाता है, वे अधिक सुदृढ़ और मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं (McGoldrick, Garcia-Preto, & Carter, 2015)। मध्यस्थ दर्शन इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक सदस्य की मौलिकता को बनाए रखते हुए भी पारिवारिक उद्देश्य की ओर सभी का योगदान सुनिश्चित किया जाए।

8.3 समाज और परिवार के बीच सामंजस्य

मध्यस्थ दर्शन में परिवार को समाज का एक बुनियादी रूप माना गया है। परिवार न केवल व्यक्तिगत जीवन का आधार है, बल्कि यह सामाजिक मूल्यों, नैतिकता और उत्तरदायित्व का भी केंद्र होता है। पारिवारिक संबंधों का सीधा प्रभाव सामाजिक न्याय, समरसता और सामूहिक चेतना पर पड़ता है (नागराज, 2011ण)।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

यदि परिवार में न्याय, समन्वय और संतुलन स्थापित होता है, तो समाज में भी शांति और समानता का प्रसार होता है। वर्तमान समय में, जब सामाजिक असमानता और विघटन की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तब परिवार का समाज के प्रति उत्तरदायित्व और भी महत्वपूर्ण हो जाता है (Sharma, 2021)। शोधों से पता चलता है कि जिन समाजों में पारिवारिक एकता और नैतिकता को महत्व दिया जाता है, वहाँ सामाजिक स्थिरता और शांति अधिक पाई जाती है (Coleman, 1988; Putnam, 2000)।

8.4 परिवार-समाज संबंधों का निर्वाह विधि

मध्यस्थ दर्शन में समाज को परिवार का विस्तारित स्वरूप माना गया है। समाज समस्त मानव जाति का सह-अस्तित्वपूर्ण संगठन है (नागराज, 2011त)। परिवार-समाज संबंधों के तीन मूलभूत आयाम हैं:

आशय: संबंधों में पूर्णता

प्रयोजन: व्यवस्था में भागीदारी

निर्वाह विधि: सेवा, श्रम और समझ

संबंधों में मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन और उभय-तृप्ति ही न्याय है। नागराज (2011थ) के अनुसार, मानव सुखधर्मी है; सुखी होकर ही सुखी करना संभव होता है। यह दृष्टिकोण सकारात्मक मनोविज्ञान (positive psychology) के सिद्धांतों के साथ सुसंगत है, जो व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण के बीच पारस्परिकता पर बल देता है (Seligman, 2011)।

9. निष्कर्ष और सुझाव

9.1 मुख्य निष्कर्ष

मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) के अनुसार परिवार समाज व्यवस्था की सर्वाधिक मूलभूत और अपरिहार्य इकाई है। परिवार में ही मानव जीवन-जागृति को प्रमाणित करता है। विश्वास, सम्मान, स्नेह और पूरकता पर आधारित परिवार समाधान और समृद्धि का केंद्र बनता है। यही व्यवस्था समाज में अभय और प्रकृति में संतुलन को संभव बनाती है।

यह शोध-पत्र निम्नलिखित मुख्य निष्कर्षों को प्रतिपादित करता है:

1. परिवार केवल जैविक या सामाजिक संरचना नहीं, बल्कि जागृत मानवों का सह-अस्तित्वपरक समूह है।

2. परिवार-मूलक स्वराज्य व्यवस्था में सर्वसम्मति से निर्णय और सहभागी क्रियान्वयन संभव है।

3. तीन पीढ़ियों का सह-अस्तित्व अनुभव, श्रम और जिज्ञासा का संतुलन स्थापित करता है।

4. परिवार में संबंध पूर्णता के अर्थ में अनुबंध हैं, जिनका निर्वाह ही न्याय है।

5. समाज व्यवस्था के पाँच आयाम परिवार स्तर से ही प्रारंभ होते हैं।

9.2 व्यावहारिक सुझाव

1. शैक्षणिक स्तर पर मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतों को परिवार शिक्षा और जीवन कौशल विकास कार्यक्रमों में समाहित किया जाना चाहिए।

2. परिवार सभा की परंपरा को पुनर्जीवित करने के लिए सामुदायिक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।

3. तीन पीढ़ियों के सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करने के लिए आवासीय और सामाजिक नीतियों में परिवर्तन आवश्यक है।

4. सह-अस्तित्ववादी जीवन-शैली को बढ़ावा देने के लिए मीडिया और सामाजिक संस्थाओं की सक्रिय भूमिका अपेक्षित है।

5. परिवार-आधारित उद्यमिता और सहकारी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए नीतिगत समर्थन आवश्यक है।

9.3 भावी शोध की दिशाएँ

1. मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतों का अन्य सामाजिक-दार्शनिक परंपराओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन।

2. परिवार-मूलक स्वराज्य व्यवस्था के व्यावहारिक क्रियान्वयन के केस स्टडीज।

3. आधुनिक नगरीय संदर्भ में तीन पीढ़ीय परिवार की संभावना और चुनौतियों का अध्ययन।

4. मध्यस्थ दर्शन आधारित परिवार परामर्श (family counseling) मॉडल का विकास।

5. सह-अस्तित्ववादी अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों का अनुप्रयुक्त अर्थशास्त्र में समावेशन।

9.4 अंतिम टिप्पणी

मध्यस्थ दर्शन परिवार को मानवीय भविष्य की आधारशिला के रूप में स्थापित करता है। यह दर्शन आधुनिक समाज की चुनौतियों—व्यक्तिवाद, भौतिकवाद और सामाजिक विघटन—का एक सुसंगत और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करता है। परिवार में जीवन-जागृति, सह-अस्तित्व और न्याय की प्रतिष्ठा ही समग्र मानवीय सभ्यता के उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

संदर्भ सूची

मूल ग्रंथ (Primary Sources)

1. नागराज, ए. (2011क). मानव व्यवहार दर्शन. जीवन विद्या प्रकाशन.
2. नागराज, ए. (2011ख). मानव कर्म दर्शन. जीवन विद्या प्रकाशन.
3. नागराज, ए. (2011ग). अनुभवात्मक अध्यात्मवाद. जीवन विद्या प्रकाशन.
4. नागराज, ए. (2011घ). मानव अभ्यास दर्शन. जीवन विद्या प्रकाशन.
5. नागराज, ए. (2011ङ). मानव अनुभव दर्शन. जीवन विद्या प्रकाशन.
6. नागराज, ए. (2011च). समाधानात्मक भौतिकवाद. जीवन विद्या प्रकाशन.
7. नागराज, ए. (2011छ). व्यवहारात्मक जनवाद. जीवन विद्या प्रकाशन.
8. नागराज, ए. (2011ज). आवर्तनशील अर्थशास्त्र. जीवन विद्या प्रकाशन.
9. नागराज, ए. (2011झ). व्यावहारवादी समाजशास्त्र. जीवन विद्या प्रकाशन.
10. नागराज, ए. (2011ञ). मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान. जीवन विद्या प्रकाशन.
11. नागराज, ए. (2011ट). मानवीय संविधान-सूत्र व्याख्या. जीवन विद्या प्रकाशन.

द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources - Hindi)

1. कुमार, एस. (2019). स्वराज्य और स्वशासन: भारतीय दृष्टिकोण. भारतीय ज्ञान मंदिर.
2. नगराज, ए. (2018). परिवार-आधारित स्वराज्य और सह-अस्तित्ववादी दर्शन. Journal of Indian Social Thought, 15(2), 45-62.
3. पाठक, एस. (2020). सह-अस्तित्ववादी दर्शन में पारिवारिक इकाइयाँ. जीवन विद्या शोध संस्थान.
4. पाठक, एस. (2021). सह-अस्तित्ववादी दर्शन और परिवार-आधारित स्वराज्य. Philosophical Review, 45(1), 78-95.
5. शर्मा, आर. (2014). भारतीय दर्शन में आत्म-शासन. Indian Journal of Philosophy, 42(3), 112-130.
6. शर्मा, पी. (2018). भारतीय समाज और पारिवारिक संरचना. राजकमल प्रकाशन.

7. सिंह, आर. (2020). मध्यस्थ दर्शन: सिद्धांत और व्यवहार. दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन.
8. तिवारी, ए. (2019). सह-अस्तित्ववादी दर्शन में सामाजिक समरसता. समाज विज्ञान शोध पत्रिका, 12(4), 203-221.
9. तिवारी, पी. (2021). समाज और संस्कृति: मध्यस्थ दर्शन के संदर्भ में. भारतीय दर्शन संस्थान.

द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources - English)

1. Coleman, J. S. (1988). Social capital in the creation of human capital. American Journal of Sociology, 94(Supplement), S95-S120. https://doi.org/10.1086/228943
2. Kumar, S. (2019). Swaraj and self-governance in Indian philosophy. International Journal of Hindu Studies, 23(2), 167-185. https://doi.org/10.1007/s11407-019-09256-7
3. McGoldrick, M., Garcia-Preto, N., & Carter, B. A. (2015). The expanding family life cycle: Individual, family, and social perspectives (5th ed.). Pearson Education.
4. Minuchin, S., Nichols, M. P., & Lee, W. Y. (2014). Assessing families and couples: From symptom to system. Pearson Education.
5. Putnam, R. D. (2000). Bowling alone: The collapse and revival of American community. Simon & Schuster.
6. Seligman, M. E. P. (2011). Flourish: A visionary new understanding of happiness and well-being. Free Press.
7. Sengupta, S. (2011). Swaraj and its contemporary relevance. Journal of Indian Philosophy, 39(2), 201-223. https://doi.org/10.1007/s10781-011-9128-5
8. Sharma, R. (2021). Family structures and social harmony: A philosophical inquiry. Asian Journal of Social Science, 49(3), 178-195. https://doi.org/10.1163/15685314-04903004
9. Walsh, F. (2016). Strengthening family resilience (3rd ed.). Guilford Press.

अतिरिक्त संदर्भ (Additional References)

1. Bowen, M. (1978). Family therapy in clinical practice. Jason Aronson.
2. Bronfenbrenner, U. (1979). The ecology of human development: Experiments by nature and design. Harvard University Press.

3. Durkheim, E. (1893/1984). The division of labor in society (W. D. Halls, Trans.). Free Press.
4. Gandhi, M. K. (1997). Hind Swaraj and other writings (A. J. Parel, Ed.). Cambridge University Press.
5. Minuchin, S. (1974). Families and family therapy. Harvard University Press.
6. Olson, D. H. (2000). Circumplex model of marital and family systems. Journal of Family Therapy, 22(2), 144-167. https://doi.org/10.1111/1467-6427.00144
7. Paranjpe, A. C. (1998). Self and identity in modern psychology and Indian thought. Plenum Press.
8. Satir, V. (1972). Peoplemaking. Science and Behavior Books.
9. Sen, A. (1999). Development as freedom. Oxford University Press.
10. Tonnies, F. (1887/1957). Community and society (C. P. Loomis, Trans.). Michigan State University Press.